MINOR RESEARCH PROJECT

(HINDI)

Executive Summary

AAPATKALOTTAR HINID NUKKAD NATAK

(UGC REFERENCENO. F. NO-23-851/13 (WRO) 21/03/2014)

SUBMITTED TO

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

WESTERN REGIONAL OFFICE (WRO)

GANESHKHIND

SAVITRIBAI PHULE PUNE UNIVERSITY CAMPUS PUNE

SUBMITTED BY

DR. TALKE APPARAO BAJIRAO

(PRINCIPAL INVESTIGATOR)

HEAD

DEPARTMENT OF HINDI

BHAGWAN MAHAVIDYALAYA (ARTS, COM. & SCI.), ASHTI

TAL - ASHTI, DIST- BEED - 414203 (M.S.)

MAY 2017

“आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक”

भूमिका

मानव जीवन प्राचीन काल से वर्तमान तक कई समस्याओं से जूझ रहा है। समय की तत्कालीन परिस्थितियों की अभिव्यक्ति रचनाकारों की रचनाओं द्वारा होती है। आदिम युग में भी मानव द्वारा इन रचनाओं की शारीरिक चेष्टाओं द्वारा भिन्न–भिन्न अभिव्यक्तियाँ हुई थीं। आदिम काल में फुरसत के समय में नाच–गाने की प्रथा से नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति आम तौर पर मानी जाती है। दरअसल, इन प्रस्तुतियों में रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़े कथानकों, घटनाओं और नाटकों का मंचन किया जाता था। परिणामस्वरूप समयानुरूप उसका विकास होते हुए आज से लगभग ढ़ाई–तीन हजार वर्ष पूर्व यूनान में नुक्कड़ नाटक का उदय माना गया है।

भारत वर्ष में नुक्कड़ नाटक की पुरातन स्थितियों को लेकर लव और कुश नाम के कथावाचकों के द्वारा रामायण महाकाव्य की परंपरा का दृष्टांत दिया जाता है। मूलतः इस नाटक की खुली मंचीयता का प्रमाण आ. भरत के दशरूपक विवेचन का ‘वीथि’ रूपक है।

मध्यकालीन समय में नुक्कड़ नाटक से मिलती–जुलती नाट्य शैली समूचे विश्व के प्रांतों, क्षेत्रों और बोलियों में निर्माण हुई थी। वास्तविक रूप से पश्चिम के धार्मिक नाटकों से इन नाटक की लोकप्रियता धीरे–धीरे विश्व में बढ़ी थी। धर्म प्रचार की दृष्टि से ये नाटक खुले मैदानों, चौराहों और बाजारों में मंचित किए जाते थे। इसके कारण समूचा विश्व इन नाटकों की प्रभावशीलता के रंग में रंग रहा था।

आधुनिक युग की परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न देशों में जन आंदोलनों का प्रभाव बढ़ रहा था। वास्तविक रूप में रूस, चीन, स्पेन, व्हिएतनाम, क्युबा, पूरे लैटिन अमरिका, आफ्रिका, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, हॉलंड आदि से जुड़े जन आंदोलनों से

तादात्म्य स्थापित कर सर्वहारा वर्ग के लोगों की समस्याओं से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में इन नाटकों की भूमि तैयार हुई थी।

कई विद्वानों का मानना है कि भारत में नुक्कड़ नाटक का प्रारंभ भारतेंदु के 'अंधेर नगरी' से हुआ था जो अधिक रूप में आजादी के पूर्व आंदोलनों के दौरान समूचे भारत में प्रयोग हुआ था। एक छोटी सी अवधि में ही इस सशक्त नाट्य–विधा ने सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अपनी नई पहचान कायम की। धीरे–धीरे तत्कालीक प्रेरक स्थितियों को अपनाते हुए ये नाटक गाँव, कस्बे, टोले–मुहल्ले में रहने वाले लोगों के बीच संवाद का मौलिक रास्ता बने हैं। दरअसल, नुक्कड़ नाटक सिर्फ नाटक नहीं, संघर्षशील समसामायिक जीवन का जीवंत दस्तावेज है। एक सशक्त नाटक के रूप में नुक्कड़ नाटक का प्रारंभ कब हुआ, यह कहना मुश्किल है, किंतु सामान्यतः इसे उस समय से जोड़ा जाता है जब जनवादी शक्तियों के द्वारा व्यवस्था विरोध की बात कहीं गई। परिणामस्वरूप जन आंदोलन के रूप में लगातार बढ़ते प्रभावों की परंपरा ही इन्हें विकसित करती रही है। इस परंपरा में भारत के राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक दलों ने गीत–संगीत नाटकों को अपनाते हुए ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ नई भूमिका निभाई है। गौरतलब है कि इसी का एक विधिवत रूप इप्टा (इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसियेशन) जैसी संस्था के रूप में सामने आया है। समूचे भारत के अलग–अलग माध्यमों के लोग एक साथ मिलकर इन नाटकों के मंचन से विदेशी शासन एवं सत्ता के विरोध के खिलाफ जनमानस को संबोधित करने लगे थे।

इस तरह पारंपारिक नाट्य परंपरा को सुव्यस्थित कर सामाजिक परिस्थितियों से निर्माण बौखलाहट, उद्वेलन, अकुलाहट की जमीन इन नाटकों की ज्योत बनी थी। नुक्कड़ नाटक का बड़ा परिवेश हिंदी से प्रभावित होने के कारण हिंदी नुक्कड़ नाटक की प्रधानता समाज में मील का पत्थर बनी। नाटक परंपरा में पहली धारा परंपरागत मंचीय नाटक की थी और दूसरी धारा के रूप में नुक्कड़ नाटक का उल्लेख है। हिंदी में नुक्कड़ नाटक को प्रतिष्ठित करने की दृष्टि से अन्य नाट्य संस्थाओं के साथ–साथ जन नाट्य मंच की भूमिका अहम रही है। इन नाट्य मंडलियों के विषय की दृष्टि से

भूख, गरीबी, मजदूर, किसान शोषण, हिंसा, आतंकवाद, सांप्रदायिकता आदि भिन्न विषयों का अंर्तभाव रहा है।

आपात्कालोत्तर के बाद जनवादी स्वरूप का नाटक प्रेक्षागृहों से बाहर गली, मुहल्लों में निकल आया और यहीं से आधुनिक भारतीय नाटक इतिहास में दूसरी बार नुक्कड़ नाटक आंदोलन की शुरूआत हुई। इसका मुख्य कारण था देश की आपात्कालोत्तर स्थिति। इन स्थितियों में हिंदी नुक्कड़ नाटक जन सामान्य की आवाज बना। दरअसल, इन स्थितियों से प्रभावित युग को नुक्कड़ नाटक का स्वर्णयुग माना जाता है। वस्तुतः आपात्कालोत्तर स्थितियों में नुक्कड़ नाटक की सार्थकता के लक्ष्य को केंद्र में रखते हुए मैंने शोधकार्य की दृष्टि से आपात्कालोत्तर नुक्कड़ नाटक को पढ़ते समय देखा कि इन नाटकों पर अधिक रूप में कार्य नहीं हुआ है। अतः उन नाटकों पर शोधकार्य करने का निश्चय किया। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन के लिए ''आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक'' विषय के अंतर्गत आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक के विविध पक्षों काअंकन किया है।

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा इस विषय पर शोधकार्य के लिए स्वीकृति मिल गई और मेरी शोधयात्रा आरंभ हुई। आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक पढ़ने के बाद पक्ष–विपक्ष में कुछ विचार बनते गए। उन्हीं विचारों की अभिव्यक्ति हैं प्रस्तुत शोध।

अध्ययन सुविधा के लिए प्रस्तुत शोधपाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय 'हिंदी नुक्कड़ नाटक अर्थ, स्वरूप और महत्त्व'के अंतर्गत हिंदी नुक्कड़ नाटक की अवधारणा, अर्थ, परिभाषाएँ, स्वरूपगत विशेषताएँ, महत्त्व, नुक्कड़ नाटक और मंचीय नाटक में अंतर, नुक्कड़ नाटक की सीमाएँ और संभावनाएँ आदिविभिन्न पक्षों को उद्घाटित किया हैं।

द्वितीय अध्याय 'हिंदी नुक्कड़ नाटक परंपरा और विकास' है। इसके अंतर्गत नुक्कड़ नाटक का उद्भव और विकास, हिंदी नुक्कड़ नाटक : प्रतिनिधि संस्थाएँ, हिंदी नुक्कड़ नाटक : प्रतिनिधि नाटककार एवं रंगकर्मियों का परिचय दिया है।

तृतीय अध्याय 'आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक का विषय वैविध्य' है। इसमें आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक की रचनाकारों के नाटकों में निर्मित प्रभावों और स्थितियों का अंतर्भाव किस प्रकार है उन्हीं अंतर्भावों का विस्तृत विवेचन है। इसके अंतर्गत राजनीतिक विषय में स्वाधीन भारत की राजनीतिक पार्टियों की धूर्तता, नकाबपोश नेतावृत्ति, सत्ता के बलबूते पर जनता का दमन साथ ही सामाजिक विषय में सामंती व्यवस्था का वर्चस्व, नारी व्यथा का चित्रण आदि बिंदुओं का अंकन है। सांस्कृतिक विषयों के पहलुओं के साथ–साथ सांप्रदायिकता के पक्ष को भी स्पष्ट किया है। आर्थिक विषय और अन्य विषय को लेकर भिन्न–भिन्न अंतर्वस्तुओं को भी स्पष्ट किया है। असल में, मानव उत्पीड़न की आंदोलनात्मक भूमिकाके विविध आयामों और विचारधाराओं को अंकित किया है।

चतुर्थ अध्याय 'आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटकों में अभिव्यक्त समस्याएँ' के अंतर्गत आपात्कालोत्तर स्थितियों से उपजी समस्याओं में राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सांप्रदायिक,आर्थिक और अन्य समस्याओं का कलात्मक विश्लेषण है। इस युग के आपात्कालोत्तर प्रभाव से वर्ग विषमता, नारी उत्पीड़न, अशिक्षा, अंधविश्वास, अवसरवाद, भाई–भतिजावाद, दल–बदल, महंगाई, कालाबाजारी, सूदखोरी, बेरोजगारी, सरकारी रवैया, राष्ट्रीय एकात्मता, धर्म, शराबखोरी, परिवार–नियोजन, हड़ताल, साम्राज्यवाद, युद्धहिंसा आदि के विविध चिंतनगत बिंदुओं को रेखांकित किया है।

पंचम अध्याय 'आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक की भाषा एवं शिल्प' है। इसमें हिंदी नुक्कड़ नाटक रचनाओं केभाषागत वैविध्य की दृष्टि से नाटकों का विवेचन है जिसमें जनभाषा के परंपरागत शब्द, मुहावरेदार भाषा, चुटीले संवाद, गीत और संगीत, कविताओं का प्रयोग आदि हैं। शिल्प विधान के अंतर्गत शिल्प वैविध्य में

कथानक, पात्र या चरित्र चित्रण, संवाद, अभिनय, स्थलचयन, वेशभूषा, गीत–संगीत, अन्य शिल्प के तत्त्व आदि की दृष्टि से विविध आयामों को उद्घाटित किया गया है।

'उपसंहार' के अंतर्गत पूर्ववर्ती अध्यायों में चर्चित सभी बिंदुओं को संक्षिप्त रूप में निष्कर्षवत प्रस्तुत किया है।

'परिशिष्ट' के अंतर्गत नुक्कड़ नाटक रचनाकार, रंगकर्मी और नाट्य अध्येताओं का साक्षात्कार, सहायक आधार ग्रंथों की सूची, सहायक संदर्भ ग्रंथों की सूची, पत्र–पत्रिकाएँ, कोश, इंटरनेट आदि पक्षों का अंकन है।

शोध सारांश

नाटक जीवन की अनुकृति है। इस अनुकृति में जब जनवादी आंदोलनों का प्रभाव बढ़ा उसी की अभिव्यक्ति 'नुक्कड़ नाटक' है। दरअसल, वर्तमान में स्ट्रीट प्ले, पथ–नाट्य, सड़क नाटक, रस्ता नाटक आदि नामों के पर्यायी आभूषणपरिलक्षित होते हैं। इन नाटकों में सामाजिक गतिविधियाँ प्रभावित रहती हैं। इन प्रभावित स्थितियों में मुख्य रूप से आम आदमी के जीवन से जुड़ी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विसंगति और विडंबनाओं की प्रस्तुति रही है। नुक्कड़ शब्द ही सीधे अर्थ में रास्तों के केंद्रीय परिवेश, स्थान का निर्धारण करता है। इन स्थानों पर जनता के बीच उठता और सामाजिक गतिविधियों पर प्रहार करता नाटक 'नुक्कड़ नाटक' का ठोस रूप लेता है। असल में, नुक्कड़ नाटक लोक नाट्य परंपरा की नई विधा है। इस विधा को जनपक्षीय कला का आदर्श रूप भी कहा जाता है। जनता की समस्याएँ, रोजमर्रा की स्थितियाँ, जीवन संघर्षों के विषयों को कलात्मक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से समाज के सम्मुख लाया जाता है।

हिंदी नुक्कड़ नाटक की परंपरा का लंबा इतिहास है। प्राचीन काल की लोक नाट्य परंपरा से लेकर वर्तमान दशक तक इन नाटकों में विषयों की विविधता दृष्टिगोचर होती है। इन विषयों को नाट्य मंडलियों के द्वारा–कलाकारों के द्वारा–

नाट्य मंचन साधनों के द्वारा, जनता के सुप्त आवाज को सृजनात्मक आधार दिया जाता है।

वस्तुतः प्रश्न उठते हैं–नुक्कड़ नाटक क्या है? इसकी परंपरा क्या है? इसके विरूद्ध इतना संदेह क्यों? आदि प्रश्न हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। दरअसल, नुक्कड़ की अवधारणा से किसी गली–मुहल्ले या बस्ती के कोने का भौगोलिक चित्र आँखों के सामने उपस्थित होता है किंतु इसी धारणा के साथ जुड़े आम आदमी, मजदूर, किसान, व्यापारी, नवयुवक, बेरोजगार, श्रमशील चरित्र, उनकी पीड़ा, दुःख भी परिलक्षित होते हैं।

मूलतः आम आदमी के सबसे करीबी साधन के रूप में लोकनाट्य की विभिन्न पद्धतियाँ थीं। आम नाटकों से भिन्न धारा की पद्धतियों को नुक्कड़ नाटकों ने अपनाया था। दरअसल, यह वो विधा है, जो नाटक होते हुए भी उसके सभी मानकों–प्रमाणों को हाशिए पर छोड़ देती है। गली–मुहल्ले, चौक, सड़क के किनारे, पार्क, विद्यालय, महाविद्यालय के प्रांगण, कारखानों के प्रांगण तक इसका क्षेत्र बने। इसका मूल उद्देश ही देश में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार, कु–प्रथाएँ, सांप्रदायिकता और जीवन जरूरतों की समस्याओं के प्रति निर्माण जन आक्रोश था। इसी के परिणामस्वरूप जहाँ–जहाँ इन समस्याओं का उद्भव होता है, वहाँ–वहाँ नुक्कड़ नाटक अपना क्षेत्र विस्तार करते हैं। दरअसल, नुक्कड़ शब्द की प्रस्तुतिकरण से व्यंग्य और विडंबन का लक्षण सामने आता है। कई विद्वान नुक्कड़ नाटक को लेकर भिन्न–विभिन्न परिभाषाओं को उद्धृत करते हैं। वस्तुतः नुक्कड़ नाटक को सर्वमान्य परिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं–जो नाट्य रूप होकर नाटक की रंगमंचीय परंपरा से अलग खुले वातावरण में अभिव्यक्त किया जाता है और उसमें कई विसंगतियों और विडंबनाओं का संकेत उभरकर आते हैं।

नुक्कड़ नाटक सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। जिसके कई लक्षण परिलक्षित होते हैं। मूलतः नुक्कड़ नाटक का स्वरूप श्रव्य न होकर दृश्य है। जो मंचीय साजो सामान

से बेहद अलगाव भरा है। किसी विसंगति को केंद्र में रखकर तुरंत अपनी विशिष्ट शैली से अपना आयाम निर्माण करता है। आम आदमी की सभी पीड़ाएँ, विडंबनाएँ और विसंगति को जनता के सम्मुख लाना ही इसका प्रमुख लक्ष्य है। इस विधा के सभी पात्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण की भूमिका निभाते हैं। इसमें अर्थलाभ की कोई गुंजाईश नहीं होती है। मूलतः नाट्य कलाकार एक से अधिक चेतन और अचेतन पात्रों की भूमिका का निर्वाह करते हैं। गौरतलब है कि इन नुक्कड़ नाटकों के लिए किसी मंच की कोई आवश्यकता नहीं है। नुक्कड़ नाटकों में संवाद उसके प्राणतत्त्व होते हैं जिससे सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार किया जाता है साथ ही दृश्य, गीत–संगीत, आभूषण, वेशभूषा, परिवेश, दर्शक, अभिनय, भाषा–शैली और प्रस्तुति की विशेषताएँ इसे अन्य नाट्य विधाओं से अनुपम बनाती हैं।

समाज परिवर्तन और समाज प्रबोधन की दृष्टि से नुक्कड़ नाटक का महत्त्व अनन्य साधारण है। लोक नाट्य परंपरा से आश्रय पाकर नुक्कड़ नाटकों की विशेष गरिमा आज भी दृष्टिगोचर होती है। समाज में पनपती भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के दमन का प्रतिरोध इन नाटकों के द्वारा किया जाता है। दरअसल, नुक्कड़ नाटक शोषक और शोषित के सभी दायरों को खोलकर तर्कपूर्ण व्यवहार को उजागर करता है। वास्तव में, इन नाटकों के रचनाकार विभिन्न विषयों के अच्छे ज्ञाता होते हैं। जिसकी फलश्रुति इन नाटकों की आत्मा बनी है। मूल रूप से नुक्कड़ नाटक सामाजिक समानता, सामाजिक परिवर्तन और समाज प्रबोधन की दृष्टि से कारगर भूमिका निभाते हैं। मूलतः कई लोग इसे संदेह और भ्रमवेष्टित नजरों से देखते हैं। इस विधा को समझने के लिए इसके पीछे के वास्तववादी दृष्टिकोण को जानना होगा। नुक्कड़ नाटकों में महिलाओं का योगदान भी उतना ही महत्त्वपूर्ण रहा है। दरअसल, महिला जन नाट्य संघ ने भी अपनी सक्रियता इस विधा में रखी है।

नुक्कड़ नाटक का निर्माण कई विद्वान यूनान की नाटक परंपरा की देन मानते हैं। उसी प्रकार भारत में भी इसके प्राचीन प्रमाण रामायण महाकाव्य के गायन की परंपरा से स्पष्ट किया जाता है। काव्याचार्य भरत ने भी इसी परंपरा में 'वीथि रूपक'

ा प्रयोग किया है। इसी के परिणामस्वरूप आगे लोकनाट्य परंपरा धीरे–धीरे विकसित ई थी, जिसका नया रूप आज का नुक्कड़ नाटक है। दरअसल, पाश्चात्य देशों के क्कड़ नाटकों से प्रेरणा ग्रहण कर हिंदी जगत में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 'अंधेर नगरी' क्कड़ नाटक की स्थापना की। कहते हैं ना किसी घटना का प्रभाव उसके मूल में ता है, ठीक उसी प्रकार नुक्कड़ नाटकों का प्रभाव पूरे हिंदी प्रदेश की उपज से ना।

प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव समूचे विश्व में दबाव बनाए हुए था। इसी के रिणामस्वरूप नए–नए आंदोलन बल पकड़ने लगे थे जिसमें नाटक से संबंधित कई स्थाएँ महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर बनी थीं, जैसे कि–रूस का 'एजिट प्राप', अमरिका का लैक थिएटर', वियतनाम का 'पेन्टोमाइम' एवं 'लिविंग थिएटर'।

जनपक्षीय कला के परंपरागत रूपों में समय–समय पर परिवर्तन हो रहा है। ोवंतता, सहज संप्रेषणीयता और व्यापक प्रभाव की दृष्टि से नाटक विधा जनता की ोकप्रिय विधा बनी है। भारतेन्दु की परंपरा का अनुग्रह कर हिंदी नाटकों में न–ब–दिन बढोत्तरी हुई है। हिंदी नाटकों की परंपरा का सबसे सहज रूप नुक्कड़ टक के रूप में उभरकर आया है। साहित्यिक विधा के रूप में नुक्कड़ नाटक के द्भव के पीछे भी कई सारी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रिस्थितियाँ उत्तरदायी थीं। भारतीय स्वाधीनता–संग्राम में ब्रिटिश साम्राज्यवाद और ार्राष्ट्रीय फासीवादी शक्तियों का विरोध अधिक तीव्र हुआ था। उसी समय जनता को पक स्तर पर प्रतिरोध की दृष्टि से भारत में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना, ा (इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन अर्थात् भारतीय जन नाट्य संघ), जनांदोलन ृथ्वी थिएटर की सहायता और मजदूर, किसान, महिला, दलित आंदोलन की भूमिका ा रही थी। इसी प्रकार जन नाट्य की परंपरा धीरे–धीरे विकसित होकर नुक्कड़ क की नई पहचान बनी। इस नई पहचान का दौर आपात्काल का समय नुक्कड़ क की उपज माना गया है। जन आंदोलन को प्राण तत्त्व बनाकर नुक्कड़ नाटक मात्रा में खेले जाने लगे।

सन् 1977 के बाद आपात्काल से प्रभावित कई नुक्कड़ नाटक की मंडलियाँ सक्रिय हो उठी थीं। 'इप्टा और नुक्कड़ नाटक', 'जन नाट्य मंच और नुक्कड़ नाटक', 'निशान नाट्य मंच और नुक्कड़ नाटक', 'सहमत' और अन्य संस्थाओं में अमृतसर नाट्य कला अकादमी', 'केरल शास्त्रीय परिषद', 'जन सांस्कृतिक मंच' आदि की परंपरा धीरे–धीरे नुक्कड़ नाटकों की लोकप्रियता को और विकास को आगे बढ़ा रहे थे। इन प्रतिनिधि संस्थाओं के साथ–साथ प्रतिनिधि नाटककार एवं रंगकर्मियों में सफदर हाशमी, रमेश उपाध्याय, शिवराम, असगर वजाहत, राजेश कुमार, मलयश्री हाशमी, शम्सुल इस्लाम, नीलिमा शर्मा आदियों का मौलिक योगदान रहा है।वास्तव में, कह सकते हैं कि नुक्कड़ नाटक की परंपरा प्राचीन के यूनान से तीन हजार वर्षों की सीमा लाँघकर वर्तमान तक नित्यनूतन हो रही है।

आपात्कालोत्तर स्थितियाँ ही नुक्कड़ नाटकों के लिए मील का पत्थर साबीत हुई है जिसमें नुक्कड़ नाटकों को व्यापक पृष्टभूमि मिली थीं। हमें ज्ञात है कि आजादी के बाद अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति तो मिली है किंतु हमारे यहाँ के पूँजीपति और सांमतों की नीतियों से आज भी सर्वहारा वर्ग मुक्त नहीं हुआ है। जिसके विरोध में आंदोलनकर्ताओं ने संघर्ष के खिलाफ सृजनात्मक रवैये के रूप में नुक्कड़ नाटकों की योजनाएँ बनाई थीं। नुक्कड़ नाटक आंदोलनधर्मी परिस्थितियों की उपज है इसलिए इन परिस्थितियों के विषयों ने इन्हें नई भूमि दिलाई हैं।

आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटकों मेंप्रमुख रचनाएँ विषय वैविध्य की दृष्टि से यथार्थ के धरातल पर खड़ी थीं। इस अध्ययन के दौरान आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटकों से जुड़ी अंतर्वस्तु में सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विषयों का कलात्मक विश्लेषण दिखाई देता है। दरअसल, राजनीतिक विषयों के अंतर्गत स्वाधीन भारत की राजनीतिक पार्टियों की धूर्तता, नकाबपोश नेतावृत्ति, सत्ता के बलबूते पर जनता का दमन और राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसेविषयों का अंकन है। सामाजिक विषयों के अंतर्गत सांमती व्यवस्था का वर्चस्व, नारी व्यथा का चित्रण, समाज में शिक्ष का महत्व, जाति–पाती के विरोध में नई चेताना आदि का प्रभाव अधिक मात्रा

में परिलक्षित होता है। सांस्कृतिक विषयों के पक्ष में अंतरजातीय विवाहों में बढ़ोत्तरी, स्त्री–पुरूष समानता, नैतिकता का पतन आदि हैं। सांप्रदायिक विषयों के साथ आर्थिक विषययों में प्रधान रूप से बढ़ती मंहगाई, सूदख़ोरी, विश्व की आर्थिक नीतियों का रेखांकन है।

अन्य विषयों में आतंकवाद का बढ़ता दबाव, बढ़ती आबादी और बाल विमर्श आदि है। वास्तव में, सभी नुक्कड़ नाटक विशाल विसंगतियों और विडंबनाओं के पूरे दस्तावेज है।

हमें ज्ञात है कि आपात्कालोत्तर समय में नुक्कड़ नाटक ने कई समस्याओं पर जनता को सचेत किया है। इनमें प्रमुखता से राजनीतिक समस्याओं में नेताओं की कुटिल मनोवृत्ति, सरकार की खोखली नीतियों का प्रभाव, अवसरवाद की समस्याओं का अंकन है। सामाजिक समस्याओं को लेकर सर्वहारा वर्ग का शोषण, नारी शोषण, जातीय उत्पीड़न की त्रासदी आदि समस्याएँ हैं। सांस्कृतिक समस्याओं से जुड़े भौतिक चीजों के प्रति बढ़नेवाली लालसा, आदर्श मूल्यों की हत्याएँ, भाषाई अस्मिता पर अतिक्रमण आदि कई मुद्दे आज भी नुक्कड नाटक के केंद्र में बने हुए हैं। सांप्रदायिक समस्या की केंद्रीयता नुक्कड़ नाटक की आवाज बनी है साथ ही आर्थिक समस्याओं में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का प्रचलन, बेरोजगारी और मुनाफाखोरी के विविध पक्षों का अंकन भी नुक्कड़ नाटक ने स्पष्ट किया है। अन्य समस्याओं में दहेज प्रथा से प्रताड़ित नारी, नशाखोरी और आरक्षण के प्रति विरोध की समस्याओं से नुक्कड़ नाटक ने इन समस्याओं की गहनता को स्पष्ट किया है।

आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक की भाषा एवं शिल्प भी समय के साथ परिवर्तित हो रहे हैं। नुक्कड़ नाटक की भाषागत विविधता में चुप्पी और खामोशी की भाषा और बिंब, संकेतो की भाषा, भाषाई अलंकारों और विशेषणों का प्रयोग, लोकतत्वों का प्रयोग, बारहमासा का प्रयोग, पात्रानुकूल भाषा आदि की विशेष पद्धति इसे भाषाई कलात्मकता की दृष्टि से परिपूर्ण बनाती है। गौरतलब है कि आपात्कालोत्तर हिंदी

नुक्कड़ नाटक में भाषाई अंगों में मुहावरेदार भाषा का प्रयोग, चुटीले संवाद, अन्य भाषाई शब्दोंका सहयोग, गीतों का प्रयोग आदि विविधता भी महत्वपूर्ण है।

आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक का शिल्प पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। शिल्प के अतंर्गत विषय प्रवेश, प्रस्तुतिकरण और संप्रेषण के लिए कथानक, पात्र–चरित्र, संवाद, अभिनय, स्थलचयन, वेशभूषा, गीत–संगीत की अनिर्वायता इसे रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत करते हैं। असल में, वर्तमान स्थितियों में इस विधा को लेकर सौंदर्य शास्त्र की कई संभावनाएँ दृष्टिगत होती हैं।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक विधा की सभी मानकों को पूरा कर रही है। भविष्य में इस विधा का निश्चित भविष्य उज्वल ही होगा।

आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटक से कई उपलब्धियाँ हमें प्राप्त होती हैं। इन उपलब्धियों के निम्नांकित निष्कर्षात्मक बिंदु–

1. नुक्कड़ नाटकों का निर्माण मूलतः जनआंदोलन के केंद्र में हुआ है।
2. किसी स्थान और परिवेश के खुले वातावरण में विसंगतियों और विडंबनाओं को केंद्र में रखकर गीत–संगीत और संवाद से जुड़े नाटक नुक्कड़ नाटक है।
3. गली–मुहल्ले, चौक, सड़क के किनारे, पार्क, विद्यालय, महाविद्यालय के प्रांगण, कारखानों के प्रांगण नुक्कड़ नाटक का प्रभाव क्षेत्र है।
4. नुक्कड़ नाटक लोक नाट्य परंपरा की आधुनिक विधा है।
5. दृश्य, गीत–संगीत, आभूषण, वेशभूषा, परिवेश, दर्शक, अभिनय, भाषा–शैली और प्रस्तुति की विशेषताएँ इसे अन्य नाट्य विधाओं से अनुपम बनाती हैं।
6. समाज परिवर्तन और समाज प्रबोधन की दृष्टि से नुक्कड़ नाटकों का महत्त्व अनन्य साधारण है।
7. नुक्कड़ नाटक में अर्थलाभ की कोई गुंजाईश नहीं दिखाई देती है।
8. आपात्काल ही नुक्कड़ नाटकों के लोकप्रियता का समय रहा है।

9. सन् 1977 के बाद आपात्काल से प्रभावित कई नुक्कड़ नाटक की मंडलियाँ सक्रिय हो उठी थीं।

10. 'इप्टा और नुक्कड़ नाटक, जनम और नुक्कड नाटक, निशांत नाट्य मंच और नुक्कड़ नाटक, सहमत जैसी अन्य नाट्य संस्थाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है।

11. वास्तव में, कह सकते हैं कि नुक्कड़ नाटक की परंपरा में सफदर हाशमी, रमेश उपाध्याय, मलयश्री हाशमी, असगर वजाहत, शिवराम, शम्सुल इस्लाम, नीलिमा शर्मा जैसे कई महत्वपूर्ण हस्ताक्षर प्रकाश में आए हैं।

12. आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटकों से जुड़ी अंतर्वस्तु और विषय वैविध्य में सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विषयों का कलात्मक विश्लेषण दिखाई देता है।

13. आपात्कालोत्तर हिंदी नुक्कड़ नाटकों से जुड़ी समस्याओं के अंतर्गत सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और अन्य समस्याओं का चित्रण परिलक्षित होता है।

14. वास्तविक रूप में नुक्कड़ नाटक की भाषा एवं शिल्प जन–साधारण को केंद्र में रखकर तैयार किया गया है।

15. नुक्कड़ नाटक में लोक नाट्य शैली के तत्वों का अधिक मात्रा में प्रयोग होता है।

16. मूलतः जनता के मन को प्रभावित करना नुक्कड़ नाटक की सबसे बड़ी सार्थकता होती है।

(PRINCIPAL INVESTIGATOR)

(PRINCIPAL)

PRINCIPAL
S.S.R. Bhalerao Chaudhari Mahavidyalaya... College
(Arts,Comm. & Science)
Ashti Tq.Ashti Dist.Beed